494 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 42
तृतीय अंक
अक्टूबर 2019

इस अंक में...

11 आपका पुरुषार्थ और कर्म ही आपके भाग्य का निर्माता है
12 राष्ट्रीय घटनाक्रम
20 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
27 आर्थिक-वाणिज्यिक परिदृश्य
35 नवीनतम सामान्य ज्ञान
42 खेलकूद
45 रोजगार समाचार
46 बिहार समसामयिक तथ्य—बी.पी.एस.सी. प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष सामग्री
52 युवा प्रतिभाएं

फोकस

57 (1) संसाधन दक्षता : वर्तमान स्थिति एवं भविष्य
59 (2) भारत में खाद्य सुरक्षा के विविध आयाम
62 (3) डिजिटल इण्डिया : सशक्तिकरण हेतु शक्ति
64 स्मरणीय तथ्य
67 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
70 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
73 विश्व परिदृश्य
77 भारतीय अर्थव्यवस्था : एक दृष्टि में

लेख

83 भौगोलिक-आर्थिक लेख-राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन : क्यों और कैसे ?
87 संसदीय कार्य सम्बन्धी विधायी लेख—संसद की स्थायी और तदर्थ/अस्थायी समितियाँ
90 प्रौद्योगिकी लेख—डिजिटल माध्यमों के द्वारा विज्ञान संचार
91 शैक्षिक लेख—शिक्षा का यथार्थ
93 संवैधानिक लेख—भारत में मृत्युदण्ड होना चाहिए या नहीं ?
95 न्यायिक लेख—सामाजिक न्याय की अवधारणा एवं इसके क्रियान्वयन में संविधान की भूमिका
98 राज्य-पद्धति लेख—भारत में सहकारी संघवाद : सिद्धान्त से यथार्थ तक
100 चिकित्सीय लेख—एंटीबायोटिक दवाओं का घटता असर और उनके विकल्प
102 पारिस्थितिकी तन्त्र लेख—संकटग्रस्त जैव-विविधता एवं मानव प्रजाति
104 राष्ट्रीय नैतिकता लेख—भारत में भ्रष्टाचार : कारण एवं निवारण
109 पर्यावरणीय लेख—ग्रामीण परिवेश में पर्यावरणीय समस्याएँ
110 कृषि लेख—हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी प्रणाली : बिना मिट्टी के फसल उगाने की वैकल्पिक तकनीक
112 पशुपालन लेख—भारत में पशुधन का महत्व : एक अवलोकन
114 सार संग्रह

वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन

118 (i) हरियाणा लोक सेवा आयोग प्रारम्भिक परीक्षा, 2017
128 (ii) राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं नौसेना अकादमी परीक्षा, 2019
135 (iii) उत्तर प्रदेश सब-इंस्पेक्टर पुलिस [नागरिक पुलिस, प्लाटून कमाण्डर (पी.ए.सी.)] अग्निशमन द्वितीय अधिकारी परीक्षा, 2017
149 एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा, 2018
156 छत्तीसगढ़ डी.एल.एड. प्रवेश परीक्षा, 2019
163 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
165 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
167 ऐच्छिक विषय (i) इतिहास—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2019
175 (ii) समाजशास्त्र—उत्तर प्रदेश प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2016
181 (iii) वाणिज्य—उत्तर प्रदेश प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक भर्ती परीक्षा, 2016
187 तर्कशक्ति परीक्षा (i) सेबी (असिस्टेंट मैनेजर) परीक्षा, 2018
191 (ii) ईएसआईसी सामाजिक सुरक्षा अधिकारी परीक्षा, 2018
194 संख्यात्मक अभियोग्यता—आई.बी.पी.एस. बैंक विशेषज्ञ अधिकारी (मुख्य) परीक्षा, 2018
201 क्या आप जानते हैं ?
202 अपना ज्ञान बढ़ाइए
203 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—क्षमा वीरस्य भूषणम
205 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—483 का परिणाम
206 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक—193
209 राज्य समाचार

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

आपका पुरुषार्थ और कर्म ही आपके भाग्य का निर्माता है

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

भाग्य के दरवाजे पर सर पीटने से बेहतर है कर्मों का तूफान पैदा करें, सारे दरवाजे खुल जाएंगे.

मनुष्य अभी की घटनाओं को देख करके जिन्दगी में निष्कर्ष निकालने की कोशिश करता है. वह किसी बात के लिए निष्कर्ष निकालना चाहता है, सिद्धान्त बना लेना चाहता है. जैसेकि एक आदमी बहुत मेहनत करे. दिन-रात और फिर भी उसको ठीक समय पर वेतन न मिले, उसको उतना व्यापार में लाभ न मिले जो अपनी गृहस्थी को चला सके, तो लोग क्या कहते हैं कि पैसा, धन, सम्पदा किस्मत से मिलती है परिश्रम से नहीं मिलती. अगर परिश्रम से मिलती होती तो ये बेचारा कितनी मेहनत करता है, कितना श्रम करता है. इसके पास अभी तक समृद्धि नहीं है. सच ही कहा किसी ने कि—

लक्ष्मी मिलती भाग्य से, भागे से क्या होए।
कुत्ता भागे रात दिन, फिर भी भूखा सोए।।

देखो न ये लोग, दूसरी तरफ ये सेठ व्यापारी लोग एकाध हस्ताक्षर करते हैं और दिनभर में हजारों रुपए कमा लेते हैं. एकाध ऑर्डर देते हैं और लाखों का लाभ ले लेते हैं. ये कुछ मेहनत नहीं करते, तब भी इनके पास में सब कुछ है. यानी किस्मत भी काम करती है, पुरुषार्थ काम नहीं करता. जल्दी से निष्कर्ष निकाल लिया गया, लेकिन क्या ये निष्कर्ष सही है. नहीं अब हम इसकी गहराई में जाएं, तो पता लगेगा कि जो आज किस्मत वाले कहला रहे हैं. उनकी किस्मत के रचयिता भी वे इंसान स्वयं हैं और उन इंसानों ने अपनी किस्मत की रचना अपनी श्रेष्ठ भावनाओं के आधार पर की है. अनेक लोग हैं, जो श्रेष्ठ भावनाएँ रखते हैं. खुद कम खाकर दूसरों को खिलाते हैं. अपने हिस्से की चीजों का स्वेच्छा से प्रसन्नता से त्याग और दान कर दिया करते हैं. ऐसे लोग ही अपनी उस किस्मत की रचना करते हैं कि अब दूसरे लोग उनको आ करके लाभ दे करके जाते हैं. ये वे लोग हैं जो कल इनसे लाभान्वित हुए थे और आज वे सभी लोग मेहनत करके उनको लाभ पहुँचा रहे हैं.

प्रकृति बड़ी संतुलित है यहाँ पर. कहीं कुछ अन्याय नहीं होता. जो व्यक्ति मन ही मन चोरी-चकारी की भावना रखता है. षड्यंत्र रचता है. झूठ की रचना करता है. किसी भाँति दूसरों के लाभ को छीनना चाहता है, आसानी से धनोपार्जन करना चाहता है, झूठ बोल करके चाहता है, कपट करके चाहता है, दूसरे को धोखा पहुँचा करके धन इकट्ठा करता है. कदाचित् आज वो पैसा पा भी लो तब भी आने वाले समय में उसे इस अवस्था में आना पड़ता है कि वह दिन-रात मेहनत करता है. तब भी गुजारा नहीं कर पाता क्यों ? क्योंकि उसने पहले बहुतों का पैसा खाया, छीना, झपटा अब आज वो बहुत मेहनत करेगा तब भी उसे थोड़ा ही मिल पायेगा, या मिल भी नहीं पायेगा, या वो इतना कुछ करेगा तब अन्ततः उसके हाथ का निबाला कोई और खाकर चला जाएगा. यानी कि उसका लाभ कोई और हड़प लेगा, क्योंकि पहले उसने किए हैं, तो जो आदमी जैसा कर्म करता है. वैसा ही लौट करके आता है.